

an>

Title: Regarding protection of cows.

**डॉ. किरिप पी. सोलंकी (अहमदाबाद) :** उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से सरकार और सदन को अवगत कराना चाहता हूँ कि आज पूरे देश भर में गौवंश हत्या बंदी और गौवंश संवर्धन के लिए आवाज उठ रही है। हमारा देश कृषि प्रधान देश है। भारतीय कृषि पूर्ण रूप से गौवंश पर आधारित थी। परंतु समय के साथ-साथ रसायनों और कृषि यंत्रों ने इसका स्थान ले लिया, जिससे हमारा समाज और गौवंश पूरी तरह से प्रभावित हुआ है। रसायनों के उपयोग से भोज्य पदार्थ जहरीले हो गये और अधिक वाहनों के कारण हमारा वातावरण दूषित हो गया है।

गौवंश की उपयोगिता के रूप में दुग्ध और दुग्ध पदार्थ मानवीय स्वास्थ्य के लिए अमृत हैं। गौमाता केवल पौष्टिक आधार पर ही पूजनीय नहीं है, अपितु इसकी उपयोगिता परिवार समाज और राष्ट्र के लिए भी अद्वितीय है। गौवंश, वास्तव में चलती-फिरती रसायनशाला है। जो घास-फूस और हरियाली गूहण करके उसके बदले में गोबर और गौमूत्र प्रदान करती है, जो फसलों के लिए भगवान का वरदान है। साथ ही बैलों की उपयोगिता से कृषि में महंगे डीजल, पेट्रोल की लागत को शून्य किया जा सकता है तथा वातावरण को भी प्रदूषित होने से बचाया जा सकता है। रासायनिक खेती में पानी अधिक मात्रा में खर्च होता है। लागत अधिक आती है और पानी के स्रोत में भी गिरावट आती है। जबकि गोबर की खाद से खेती करने पर उत्पादन बढ़ता है तथा कृषि लागत कम होती है और किसान की आय में बड़ोतरी होती है। इसके साथ ही साथ गौ के अपशिष्ट पदार्थों से कीटनाशक खाद, दवाइयाँ आदि निर्मित करने से मानव जाति को फायदा तो होता ही है साथ ही साथ हजारों हाथों को रोजगार भी मिलता है। यह वैज्ञानिक रूप से सिद्ध हो चुका है कि मात्र गौमूत्र से ही 100 से ज्यादा रोगों का इलाज संभव है। इसलिए इसे पांच से ज्यादा अंतर्राष्ट्रीय पेटेंट प्राप्त हो चुके हैं।

अतः केन्द्र सरकार से निवेदन है कि भारतीय परिषद को ध्यान में रखते हुए गौ संवर्धन और गौ संरक्षण के लिए ठोस और कारगर नियम बनाये, गौ हत्या पर पूर्ण रूप से प्रतिबंध लगाया जाए, गौ माता को राष्ट्रीय प्रतीक मानते हुए इनकी सुरक्षा की जाए तथा गौशालाओं का निर्माण करके इनके वंश में वृद्धि करने के लिए सार्थक नियम बनाये जाएं। धन्यवाद।

HON. DEPUTY-SPEAKER:

Shri Sumedhanand Sarswati,

Shri Pushendra Singh Chandel,

Shri P.P.Chaudhary,

Shri Sudhir Gupta,

Shri Devji M. Patel,

Shri Bhairon Prasad Mishra and

Ramsinh Rathwa are allowed to associate with the issue raised by Dr. Kirit P. Solanki.